B.A. II Part 4th पत्र 12/2/22 Dr. Arun Kumar
Hindi Hons S.S. Co. Jehanabad

ये आते हैं तो उनका रूप निहारने की अपेक्षा उन्हें उसके हृदय की बात सुनना अधिक भाता है।"

— (विश्वम्भर नाथ 'मानव')

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि विश्व-विमोहिनी प्रकृति-सुन्दरी का जैसा सचेतन, सुकुमार, मर्मस्पर्शी और सहज सौन्दर्यमय रूप पंत जी के काव्य में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

आलम्बन की बात कहकर संसार के चिर उदासीन का कमल आत्मा की व्याकुलता का सुन्दर संकेत किया गया है।

आधुनिक युग प्रकृति का सर्वाधिक प्रयोग प्रतीकों के रूप में हुआ है। पंत जी की 'परिवर्तन' शीर्षक कविता में अनेक प्रतीक आये हैं, पर जब मैं समग्र रूप से विचार करता हूँ तो देखता हूँ कि प्रकृति के प्रति पंत जी का दृष्टिकोण निरन्तर विकासशील रहा। 'वीणा' प्रकृति का रम्य प्रांगण है। यहाँ पंत के सम्बन्ध में प्रकृति के प्रति कोमल जिज्ञासा का भाव है। 'ग्रन्थि' में प्रकृति उद्दीपनात्मक रूप धारण करती है। 'पल्लव' में प्रकृति का विस्तृत चित्र फलक मिलता है। तब तक पंत जी की दृष्टि सर्वो प्रकृति के कोमल और रम्य रूप पर ही रही है। 'परिवर्तन' शीर्षक कविता में पंत जी की दृष्टि प्रकृति के कठोर और भीषण रूप पर भी जाती है। 'एकतारा' और 'नौका विहार' में प्रकृति वर्णन पर पंत जी के दार्शनिक और आध्यात्मिक चिन्तन की छाया दिखाई पड़ती है। 'गुंजन', 'युगवाणी' और 'ग्राम्या' में पंत प्रकृति की यथार्थ भूमि पर आते हैं। 'ग्राम्या' में 'नील' जैसे सामान्य प्राकृतिक विषयों पर भी उनकी दृष्टि जाती है इस प्रकार प्रकृति चित्रण के सम्बन्ध में पंत जी के विकसित दृष्टिकोण का परिचय मिलता है।

पंत जी के प्रकृति चित्रण के सम्बन्ध में निम्नलिखित आलोचकों का मन्तव्य भी स्पष्ट है —

"कवि ने प्रकृति के ताने-बाने में मानव आत्मा का रूप रंग भरकर उसका अपूर्व अंकन किया है। पंत प्रकृति के चिर संगिनी हैं। उनकी आत्मा उससे एकाकार सी हो गयी है।"

— (डॉ० नगेन्द्र)

"प्रकृति पंत की सौन्दर्य दृष्टि का सहज आलम्बन है और उनकी वाणी का सहज विषय।"

— (डॉ० देवराज)

"पंत जी ने प्रकृति की एक-एक वस्तु में चेतना पहचानी है। प्रकृति का उन्होंने शरीर ही नहीं देखा, मन भी देखा है और देखी हैं उसके मन की भावनाएँ भी। सरिता, सुमन, नक्षत्र, बादल आदि के संपर्क